

सामधानः सम्यग्दीपयन्वातिष्ठो मुनिः रायेधनप्राप्तये जह्व्यं स्तोत्रं हृन्गमयन् यक्षियजति
 इत्यारण्यके पत्रं निनैल्लं कंठीये भस्म तत्रावद्धीपे एकनवत्यधिकश्चिरस्ततोऽध्यास्यः ॥ ३९९ ॥
 ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥
 ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥
 ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥
 ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥